सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल। (LEFI,Chennai)

मार्च-अप्रैल, 2003

खज़ाना

मत्ती(१३:४५,४६)' फिर स्वर्ग का राज्य उस सच्चे मोतियों को खोजने वाले एक व्यापारी के समान है। जब उसे एक बहूमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस मोती को खरीद लिया। '

हममें से हरेक एक संग्रह करने वाला है। कुछ सिक्के, डाक टिकट, बेसबाल कार्ड, चित्र इत्यादि इक्ठ्ठे करते हैं। यदि तुम अपनी जाँच करो तो तुम पाओगे कि तुम 'ख़ज़ाने' के संग्रह करने वाले हो। ***बाइबल कहता है जहाँ तुम्हारा ख़ज़ाना है वहाँ तुम्हारा मन लगा रहेगा।*** क्या तुम अपना सारा समय और पैसा ऐसी चीज़ों पर लगा रहे हो जिनमें से मृत्यु पर एक भी तुम्हारे साथ नहीं जाएगी? तुम्हें केवल एक चीज़ पाने की आवश्यकता है जो तुम अभी पा सकते हो और जो तुम मरने पर अपने साथ ले जा सकते हो - अनंत जीवन।

'अनंत जीवन' की मुफ़्त भेंट तुम परमेश्वर से पा सकते हो। समाज सुधार के कार्य और अच्छे कामों से तुम अनंत जीवन नहीं ख़रीद सकते। तुम एक रस्सी फेंक कर स्वर्ग में नहीं चढ़ सकते - वह नीचे गिरा देनी चाहिए। जब तुम अपनी असहाय स्थिति और निराशा को स्वीकार करते हो और उसे (परमेश्वर) पूरे मन से पुकारते हो, वह तुम्हारी सुनेगा और सहायता करेगा।

तुम जानते हो कि यदि तुम एक-एक पैसा

खज़ाना.....पृष्ठ ४ पर...

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ना

'और मैं, यदि मैं पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब लोगों को अपने पास खीचूँगा। युहन्ना(१२:३२)'

यीशु क्रूस पर होने वाली अपनी मृत्यु की बात कर रहे हैं. दूसरे धर्मों में और मसीही धर्म में अंतर - मृत्यु और यीशु मसीह का पुनरुत्थान है। यह सत्य और प्रायश्चित तुम किसी दूसरे धर्म में नहीं पाओगे। हिंदू ऋषियों ने सांसारिक लालसाओं और पाप पर विजय पाने के लिए कठोर मेहनत की। वे जंगलों में गए, अपने शरीरों को ताड़ना दी, और केवल शाकाहारी भोजन खाया। उन्होंने अपने शरीर को कठिन उपवासों में रखा। इन सब के बावजूद, न तो वे अपनी शारीरिक लालसाओं पर विजय प्राप्त कर सके, न ही उद्धार का मार्ग जान सके।

बुद्ध ने चिंतन का प्रयोग किया और अपने शरीर को कठिन उपवास पर लगा दिया - उद्धार पाने के लिए। अपनी इच्छाओं को मारो, अहिंसा का मार्ग अपनाओ और निर्वाण प्राप्त करो, यह उसने प्रचार किया। यह मार्ग भी हार का मार्ग है।

सभी लोगों ने पाप किया है। उन्होंने जन्म से पापी स्वभाव प्राप्त किया है। आदमी ने अपने द्वारा किए गए पापों से मुक्ति पाने और पापी स्वभाव से मुक्ति पाने के लिए बहुत कोशिश की है। वह, जिसने प्रथम आदम की सृष्टि की, उसी ने दूसरे आदम (प्रभु यीशु मसीह) को इस संसार में पापी लोगों का उद्धार करने के लिए भेजा।

यीशु, दूसरे आदम, ने एक पवित्र, निष्पाप और सिद्ध जीवन जीया और क्रूस पर मरने के लिए लटकाया गया कि हमारे पापों के लिए प्रायश्चित करे। पापी स्वभाव से छुटकारा दिलवाए, वह जो क्रूस पर कीलों से ठोका गया, हमें भी अपने क्रूस पर बुलाता है। यहाँ, उसके साथ हमारे पापी स्वभावों को भी ठोका गया था। यीशु पापियों को अपने क्रूस के पास इसलिए बुलाता है कि वे उसकी मृत्यु द्वारा अपने पापों की सजा की क्षमा प्राप्त कर सकें।

इसके पश्चात, वह उन्हें अपने साथ एक क्रूस पर चढ़ा जीवन जीने को बुलाता है कि वे पापी स्वभाव से छुटकारा पाएँ। इस संसार में कोई दूसरा नहीं जीया जो निष्पाप हो। वह परमेश्वर का मेमना अपने शरीर पर हमारे पापों को लेकर क्रूस पर गया और मरा। वह दुबारा जीवित हो उठा, पाप माफ़ करने के अधिकार के साथ। किसी दूसरे व्यक्ति को हमारे पाप माफ़ करने का अधिकार नहीं मिला है।

एक और अनुग्रह उन लोगों को प्राप्त है जो क्रूस को निहारते हैं. शारीरिक लालसाएँ मर जाती हैं। अपनी इच्छा-शक्ति द्वारा अपने शरीर को तीव्र कष्ट देना, अपने गले को रस्सी से घोंटने के समान है। इस प्रकार यदि तुम क़ब्र में भी जाओ तो भी तुम्हारे पाप और पापी स्वभाव तुम्हारे अन्दर रहता है। यदि तुम अपने शरीर को भूखा रखो और इसे कमज़ोर बनाओ, तुम्हें ऐसा लगेगा कि शारीरिक लालसाएँ मर गई हैं। लेकिन वे फिर भी वैसी की वैसी हैं। जब बारिश के पानी की कमी के कारण भूमि की ऊपरी परत सूखी हो, तो जो बीज उसमें दबे हैं, वे अंकुरित नहीं होते। जो अपने शरीर को सुखाने की कोशिश करते हैं उनकी स्थिति वैसी ही है।

यीशु का क्रूस ही हमारा इलाज है। 'कि पाप हमारे नश्वर शरीर में शासन न करे, पुराना स्वभाव मसीह के साथ क्रूस पर ठोका हुआ है।' यदि हम मसीह के साथ मरते हैं तो उसके साथ जीयेगे भी। अर्थात् यदि विश्वास के द्वारा, हम आत्मसात्रकण करे और मसीह की मृत्यु में सहभागी बने, पापी शरीर, पाप के लिए मर जाता है। पाप हमारे पर शासन नहीं कर पाएगा। विश्वास द्वारा हमने मुक्ति पाई है। और दुबारा विश्वास द्वारा हम उसमें क्रूसित हुए हैं। हम, जो एक समय अपने आप को पूरी रीति से पाप में लगाए थे, अब पाप से

मसीह के साथ...पृष्ठ २ पर....

मसीह के साथ...पृष्ठ १ से....

छुटकारा पाए हैं कि अब संपूर्ण मन से धार्मिकता के सेवक बनें। इसका परिणाम यह निकलता है कि पवित्रता हमारा भाग ठहरता है। इसका लाभ अनंत जीवन है।

यह अद्‌भुत अनुभव है जो विश्वास के द्वारा हम पाते हैं। क्या हमने यीशु मसीह में नया जन्म पाया है? यदि ऐसा है, तो यह अच्छा है। लेकिन क्या तुम यीशु के साथ क्रूस पर चढ़े हो? इस शरीर द्वारा हम संसार के संपर्क में आते हैं और सांसारिक इच्छाएँ हमारे अंदर प्रवेश करती हैं. ये लालसाएँ हमारी इच्छा शक्ति को क़ाबू में कर हमारी आत्मा पर नियंत्रण करने की चेष्टा करती हैं। इस धरती पर कोई ऐसी ताक़त नहीं जो हमें इस ग़ुलामी से छुड़ा सके। हमें अपना आत्मा पवित्र आत्मा के नियंत्रण में कर देना चाहिए। जिसने हमें आत्मिक जीवन दिया है। हमारी इच्छा शक्ति भी पवित्र आत्मा के नियंत्रण में रहनी चाहिए। यह बदलाव, नया जन्म कहलाता है। हर व्यक्ति जिसने मन फिराया है अपनी इच्छा शक्ति को आत्मा के नियंत्रण में करता है, जो पवित्र आत्मा द्वारा चलाए चलता है।

जब हम मसीह के साथ क्रूस का अनुभव करते हैं, हमारी इच्छा शक्ति जो सांसारिक इच्छाओं की ग़ुलाम थी, अब परमेश्वर की इच्छा के साथ मिल जाती है। जब हम प्रार्थना द्वारा परमेश्वर के वचन पर भरोसा करते हैं, हमारा अंतःकरण जो परमेश्वर के आत्मा द्वारा सिखाया जाता है, हमारी इच्छा शक्ति को नियंत्रित कर परमेश्वर की राह में लगा देता है।

जब तुम क्रूस की ओर देखोगे, तुम्हारी पराजय दूर हो जाएगी और विजय द्वारा बदल दी जाएगी। जब तुम क्रूस पर मनन करते हो, तुम्हारे भद्दे स्वभाव के स्थान पर पवित्र इच्छाएँ आ जाएँगी। इस प्रकार जब तुम ऊँचे उठाए गए हो तो दूसरों को भी ऊँचा उठओगे। वह मसीह के साथ क्रूस पर ऊँचा उठाया जाता है, दूसरों को आकर्षित करने के लिए वह सामर्थी व्यक्ति बनता है। उसके चारों ओर आत्मिक आकर्षण बढ़ता जाता है। जैसे-जैसे तुम अपने हृदय को पर्याप्त रूप से परमेश्वर के वचन बाइबल से भरते हो, तुम्हारा आंतरिक भाग जो तुम्हारी इच्छा को नियंत्रण में रख सकता है और अधिक बलवान होता जाएगा। जैसे, परमेश्वर के वचन का आज्ञापालन तुममें बढ़ता जाता है, दूसरों को आकर्षित करने का बल तुम्हारे अंदर बढ़ता जाता है. यदि लोहे के साधारण टुकड़े को चुंबक के साथ चिपका कर थोड़े समय के लिए रखा जाए तो वह चुंबक बन जाता है।

जब तुम क्रूस की ओर देखते हो, तुम एक आत्मिक चुंबक में बदल जाते हो। तुम दूसरे साधारण लोहे के टुकड़ों को अपनी ओर खींचोगे।

जो मसीह के साथ क्रूस पर चढ़े हैं वे उसके साथ पुनरुत्थान में भागी होंगे। ऐसे लोगों के लिए हार नहीं है। जब यीशु क्रूस पर मरा, उसने संसार पर संपूर्ण विजय प्राप्त की और दुश्मन की सारी ताक़त से ऊँचा उठा। जो उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में भागी होते हैं, उसके अधिकार में भी सहभागी होते हैं। कृपया रोमियों का छठा अध्याय सौ बर पढ़ो और उस पर मनन करो। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में परमेश्वर द्वारा सहभागी रहो, एक देह जो पाप के लिए मरी हुई और आत्मा जो परमेश्वर के लिए जीवित है। तब हर स्थान पर जहाँ-जहाँ तुम्हारे कदम पड़ेंगे, तुम विजय देखोगे।

हे मसीही, क्यों तुमने अपने गाँव को मसीह के लिए जीता है? यदि तुम वास्तविकता में यीशु के साथ क्रूस पर चढ़े हो और मृत्यु में भागी हुए हो तो तुम ज़रूर अपने कस्बे को मसीह के लिए जीत लोग। दूसरों को देखकर तुम्हारे ध्यान नहीं बँटेगा बल्कि तुम प्रार्थना करोगे, अपने चारों ओर प्रार्थना समूह तैयार करो और तब तक निवेदन करो जब तक कस्बे को मसीह के लिए जीत न लो। चाहे, तुम एलिय्याह की तरह अकेले ही क्यों न हो, तुम फिर भी जीतोगे या फिर नहेमायाह की भाँति मंडली के साथ काम करोगे तो भी जीतोगे। जहाँ कहीं से भी तुम गुज़रोगे मसीह की महिमा हर स्थान पर दिखाई देगी। तुम मसीह के साथ सहकर्मी बनोगे। प्रेम, विश्वास, नम्रता और पवित्रता तुम्हारे जीवन से अपने आप दिखाई देगा। पवित्र आत्मा का फल उनके जीवन में आता है जो मसीह के साथ क्रूस पर चढ़े हों।

तुम अपने पारिवारिक जीवन में विजय देखोगे। तुम अपने भटके हुए बच्चों को दुबारा वापस पा लोगे। जब तुम प्रार्थना कर रहे होगे, तुम्हारी आत्मिक शक्ति भटके हुओं के जीवन में काम करेगी। यह तुम्हारी पत्नी के जीवन में काम कर सकती है, तुम्हारे पति के जीवन में काम कर सकती है। जब तुमने मन फिराया था तब प्रभु ने तुम्हें एक शुद्ध हृदय और शुद्ध विवेक दिया था, तुम्हें क्रूस पर चढ़ना चाहिए। पौलुस इस अनुभव के विषय में ग़लातियों की पुस्तक में व्याख्या करता है - ग़लातियों (२:२०) 'मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ। अब मैं जीवित नहीं रहा, परंतु मसीह मुझ में जीवित है, और अब मैं जो शरीर में जीवित हूँ, तो केवल विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।'

- स्वर्गीय श्रीमान एन दानियल।

परमेश्वर लोगों के कार्य से सर्वोपरि है।

'हे मेरे भाइयों, जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनंद की बात समझो, यह जानते हुए कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।..याकूब(१:२-४)'

परमेश्वर हमें याकूब की पुस्तक में बताते हैं कि जब हम अनेक परीक्षाओं और कष्टों से गुज़रें तो उसे आनंद की बात गिनें। वह यह नहीं कह रहे हैं कि जब हमें हानि हो तो उसकी ख़ुशी मनाएँ। बल्कि, हम इस बात में विश्वास कर सकते हैं कि एक न्यायी, प्रेमी और दयामय पिता परमेश्वर इन सब घटनाओं का अपनी अच्छी और सिद्ध इच्छा को पूरी करने में उपयोग कर रहा है और हम आनंद मना सकते हैं कि इन कठिन परिस्थितियों के द्वारा परमेश्वर हमें यह दिखा रहे हैं कि हमारी आशा कहाँ लगी है। क्या हमारा भरोसा उन परिस्थितियों पर है, जिनसे हम घिरे हैं? या हमारा भरोसा यीशु के लहू और धार्मिकता पर ही लगा है?

कुछ साल पहले मैंने एक दंपति की साक्षी सुनी, जिनकी बेटी मर गई थी। उन्होंने बताया कि मसीही होते हुए भी कितनी आसानी से हम परमेश्वर से क्रोधित हो जाते हैं। उन्होंने परमेश्वर से कैथरिन(उनकी बेटी) को बचाने की प्रार्थना की और ऐसा लगा कि उसने प्रार्थना का जवाब नहीं दिया। 'लेकिन धीरे-धीरे .... बहुत धीरे-धीरे... हमने यह अनुभव किया कि हमारा दृष्टिकोण बहुत ही सीमित था, हमारा भरोसा अपनी ही प्रार्थना के उत्तर में था यह सोचते हुए कि वही सर्वोत्तम है। न कि परमेश्वर के चरित्र पर भरोसा करते हुए कि जो उसकी दृष्टि में सर्वोत्तम है वही हो। 'यहोवा कहता है कि मैं उन योजनाओं को जानता हूँ, जिन्हें मैंने तुम्हारे लिए बनाई हैं ऐसी योजनाएँ जो हानि की नहीं परंतु तुम्हारे कुशल की हैं कि तुम्हें उज्ज्वल भविष्य और आशा दूँ। यिर्मयाह(२९:११)। '..हानि की नहीं परंतु..' हमने अपना भरोसा ग़लत स्थान पर लगाया हुआ था - जब तक कि परमेश्वर ने हमें यह याद नहीं दिलाया कि हम आशा के परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं और उसकी आशा हमें निराश नहीं करेगी। यही है जिससे हमें चिपटे रहना है चाहे परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो। यदि, हम एक क्षण के लिए भी यह सोचें कि परिस्थिति परमेश्वर के नियंत्रण के बाहर है, तो हमने सही दिशा से ध्यान बटा दिया है और हम यह निर्णय सारे तथ्यों के बिना कर रहे हैं?

पौलुस ने हमें यह बताया - क्योंकि यह विशाल आशा हमारे अंदर बसी है - अपनी हानियों में हमें विलाप नहीं करना चाहिए।

हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जीवित हो उठा और इसलिए हम यह भरोसा करते हैं कि जो मसीह में मरते हैं वे दुबारा जीवित हो उठेंगें। और इन आशापूर्ण शब्दों से हमें एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिए। आख़िरकार, यदि हमारा परमेश्वर कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर नहीं तो वह परमेश्वर है ही नहीं।

- रैव्य. साऊंडरस।

उदाहरण का महत्व

कुछ साल पहले एक शाम हम रात्रि भोज के लिए तैयार हो रहे थे। जब डाना (मेरी पत्नी) मेज़ पर खाना परोस रही थी तो मैंने अपने बच्चों से पूछा कि वे क्या खाऐंगें।

-तुम दूध, रस या पानी में से कुछ भी ले सकते हो-, मैंने कहा।

माइकल और मान्डा, मेरे दो सबसे छोटे बच्चे, बोले कि दूध चाहिए। मैथ्यु न पूछा, मेरा बड़ा बेटा जो लगभग ५ साल का था, 'पिताजी, आप क्या ले रहे हो?'

'मैं, शायद पानी लूँगा', मैंने जवाब दिया।

'मैं, भी पानी लूँगा', मैथ्यू ने निर्णय किया।

मैं मान्डा और माइकल के लिए दूध ले आया और मेरा मन भी दूध पीने को करने लगा, मैंने कहा, 'मैं भी दूध पी रहा हूँ।', और अपने लिए एक गिलास दूध डाल लिया।

'मैं तो मैं भी दूध पिऊँगा', मैथ्यु ने मुझे कहा।

' तुम्हारा विचार बदल गया? ठीक है, मैं तुम्हारे लिए भी दूध ले आता हूँ।',

खाना खाते समय, मैंने अपनी पत्नी को मकई की सब्ज़ी पकड़ाने को कहा। मैथ्यु बोला,' पिताजी, मुझे भी थोड़ी मक्की दो। '

मैं मैथ्यु में एक झुकाव का अनुभव करने लगा।

' मैथ्यु', मैंने कहा,' यदि मैं बाहर जाकर मिट्टी को मिठाई की तरह खाऊँ, क्या तुम भी कुछ खाओगे?'

वह हँसा और बोला,' हाँ।'

' यदि मैंने एक कीड़ा खाया, क्या तुम भी खाओगे?', मैंने पूछा।

उसे और हँसी आई, 'छी, एक कीड़ा?' अपने चेहरे पर भाव बनाते हुए उसने सवाल किया।

'हाँ, एक बड़ा मोटा रसीला कीड़ा। क्या तुम खाओगे यदि मैंने खाया?'

हँसते हुए उसने कहा, 'हाँ।'

' मैथ्यु, यदि मैं मिट्टी या कीड़ा खाऊँ तो तुम क्यों खाना चाहते हो? क्या तुम्हें नहीं लगता कि वह कितना बेस्वाद होगा? क्या तुम केवल इसलिए खाओगे क्योंकि मैंने खाया?' मैंने सवाल किया।

' क्योंकि आप मेरे पिता हो।' उसने गर्व से कहा।

इसके बाद क्या बातचीत हुई मुझे याद नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी पत्नी ने भोजन के समय इस प्रकार के विषयों, कीड़े और मिट्टी से किसी ओर ध्यान ले गई होगी। लेकिन मैथ्यु के शब्द मेरे मन की गहराई में बस गए, और वह सारी शाम मैं उनके बारे में सोचता रहा।

' क्योंकि आप मेरे पिता हो।'

यह सही है कि उस समय मुझे यह अनुभव हुआ कि अपने बच्चों के पालन पोषण में मेरी कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है। उस समय तक मैंने एक अच्छा पिता बनने की कोशिश की। मैं अपने बच्चों को अच्छे बच्चे बनने की शिक्षा देता था। लेकिन उस घड़ी, मैंने यह पूरी तरह समझा कि मेरा उनके ऊपर कितना असर है।

मेरे बच्चे, चाहे हम ध्यान दे या नहीं, मेरे और डाना के हर कदम को देख रहे हैं। जैसे कहावत है, 'कार्य शब्दों से ऊँचा बोलते हैं।' और मैं यह समझता हूँ कि बच्चों पर यह दो गुना लागू होता है। कम से कम आरंभ के कुछ सालों में, अपने जीवन में, अपने जीवन के बारे में जो कुछ वह सीखते हैं, कैसे काम करना, कैसे दूसरों के साथ व्यवहार करना, वे अपने माता-पिता को देखकर ही सीखते हैं।

यदि पिता, माँ से प्रेम से, करुणा से और इज़्ज़त से बर्ताव करे तो वे भी उसके साथ वैसा ही करेंगे। यदि पिता अपने मिलने वाले लोगों से मिलनसार हैं तो वे भी मिलनसार होंगे।

यदि पिता अपनी बाइबल नियमित रूप से पढ़ता और प्रार्थना करता है तो वे अपने जीवन में परमेश्वर के महत्व को समझेंगे। यदि पिता हमेशा सच्चा है तो वे सत्य बोलने का मूल्य जानेगें। और यह भी सच है कि इसका उल्टा भी सत्य है कि पिता को झूठ बोलता देख कर सोचेंगे कि यह सामान्य बात है।

यदि माता-पिता आपस में बात-बात पर झगड़ा करते हैं, तो बच्चे भी वैसा ही व्यवहार करेंगे और आपस में भाई-बहनों में भी वैसा व्यवहार रहेगा। वे भी वाद-विवाद करना और उल्टा जवाब देना सीख जाएँगे।

यदि पिता चिड़चिड़ा है और रास्ते में अपने आगे चलने वाली गाड़ी के ड्राइवर को गाली देता है, वे भी गालियाँ बकना सीख जाएँगे और दूसरों को नीचा समझेंगें।

यदि पिता, माँ को यह कहे कि फ़ोन पर जो पूछ रहा है, कह दो मैं घर पर नहीं हूँ, तो वे सीख लेंगे कि झूठ बोलना साधारण बात है, कोई ग़लत नहीं।

यदि पिता कभी-कभार चर्च जाए और एक सच्चा मसीह जीवन न जिए, वो पाखंडी बनना सीख जाएँगे।

हमारे हरेक बच्चे के साथ, मैं यह समझने लगा कि मुझे केवल कुछ ही साल मिले हैं, उनके ऊपर असर लाने के, इससे पहले कि दूसरा असर आए, इस दौड़ में कि किसका असर उन पर आए। इनमें से कुछ असर सकारात्मक और कुछ नहीं। और कुछ असर मुझ से बढ़कर होंगे।

जल्द ही मैथ्यु, मान्डा और माइकल अपने माता-पिता की तुलना में, अपने स्कूली सहपाठियों के साथ अधिक, समय बिताऐंगें।

वे गली के बड़े बच्चों से बर्ताव करना सीखेंगें। वे टेलिविज़न पर ऐसे कार्यक्रमों को देंखेंगे, जो रोक न पाएँ, जैसे कि दोस्तों के घर पर फ़िल्में देखना।

वे 'वास्तविक संसार' का सामना करेंगे। यह हमारा कर्तव्य माता-पिता होने के नाते है, उन्हें वास्तविक संसार के लिए तैयार करना और यह सिखाना कि दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करें। हमें उन्हें सीखना है कि जब हमारे सामने कई विकल्प हों, तो सही चुनाव कैसे करें। हमें उन्हें सिखाना है कि सही और ग़लत में कैसे अंतर समझें। हमें उन्हें अनुशासन, सकारात्मक सोचविचार, मित्रता, प्रेम और प्रार्थना सिखाना है।

वे वही करेंगे जो हम करते हैं। वे वैसे ही व्यवहार करेंगे जैसा हम करते है। वे वैसा ही बोलेंगे, जैसे हम बोलते हैं। वे लोगों से वैसा ही बर्ताव करेंगे जैसा हम करते हैं। वे वैसे ही प्रार्थना और अराधना करेंगे, जैसा हम करते हैं।

मैथ्यु, कम से कम अभी मेरे जैसा बनना चाहता है। वह उसके आयु बढ़ने पर बदलेगा, नया उदाहरण उसके जीवन में आएँगे। लेकिन इस बीच मैं ही वह उदाहरण हूँ। मैं ही उसका रोल मॉडल हूँ। और यह बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है. और इसे मैं पूरी गंभीरता से लेता हूँ।

'क्योंकि मैं पिता हूँ।'

- चुना गया।

सत्य की परख!

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परंतु अनंत जीवन पाए। युहन्ना(३:१६)

पृष्ठ ३

वह हमारे अपराधों के कारण घायल हुआ।

'परंतु वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया, हमारी ही शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए। यशायाह(५३:५)'

यशायाह की पुस्तक के ५३ अध्याय के एक भाग को हम, तुलना से परे, सुंदर और हृदय विदारक दृश्य को देखते हैं। कृपया पूरा अध्याय पढ़िए, जहाँ बड़ी स्पष्टता से यशायाह ने मसीह की प्रायश्चित्तिक मृत्यु का चित्र दर्शाया है। लेकिन ध्यान रहे कि यशायाह ने इस घटना के घटने से ७०० साल पहले भविष्यवाणी की थी। यह बाइबल का एक और अद्वितीय पहलू है। नबियों ने पहले ही यह नबूवत की थी कि सारे संसार का मसीहा आएगा और आदमी के पाप के लिए प्रायश्चित बलि बनेगा।

अनेक प्रकार की प्रायश्चित बलियों या भेंटों को देख, यह स्पष्ट नज़र आता है कि मनुष्य के हृदय की गहराई में यह इच्छा है कि किसी न किसी तरह अपने पाप और विद्रोह की सजा से बचने के लिए कुछ करे।

लेकिन कैसे कोई सजीव या निर्जीव, महँगी या सस्ती भेंट पवित्र परमेश्वर के मन को भाए, जिसके सामने हमारे पाप, अकथनीय घृणित और अत्यंत घिनौने हैं? यह असंभव है कि हम भेंट देकर जीवित परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें और स्वर्ग का स्थान ख़रीद लें।

लेकिन परमेश्वर ने बलि का मेमना पाया - उसका अपना पुत्र, जो कि उसके व्यक्तित्व का प्रकाशन है। इस कारण जब हम निराशा में थे, उद्धारकर्त्ता आया। एक स्थान पर, जिसका नाम कलवरी है, यरूशलेम (शहर) की दीवार के बाहर। उसने अपना जीवन न्योछावर कर दिया हमारे पापों और सारे मानवता के पापों के प्रायश्चित के लिए। वह उस क्रूर क्रूस पर मरा, जहाँ वह त्यागा गया, तुच्छ जाना गया, उस पर थूका गया और उसका मज़ाक उड़ाया गया।

कलवरी के क्रूस की क़ीमत आँकना असंभव है। पाप उसके लिए परदेशी था - उसने कभी पाप नहीं किया। फिर भी उसने मेरा पाप, तुम्हारा पाप अपने ऊपर ले लिया। हालाँकि हम नाशवान भी कभी-कभी अपने पापों से घृणा करते हैं और कई इस तरह के निर्णय लेते हैं कि दुबारा अपने को दूषित नहीं करेंगे, लेकिन इसका हमारे ऊपर कोई असर नहीं होता। लेकिन निष्पाप उद्धारकर्त्ता स्वर्ग के पवित्र वातावरण को त्याग, क्रूस पर मरने नीचे आया कि मेरे और तुम्हारे साथ सहानुभूति दिखाएँ। यह प्रेम है, उसकी पराकाष्ठा और शुद्धता का उच्चत्तम स्तर।

बाइबल कहता है, 'इस प्रकार मनुष्य के रूप में प्रकट होकर स्वयं को दीन किया और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु वरन क्रूस की मृत्यु भी सह ली। फिलिप्पियों २:८' आदमी के पाप की सजा चुकाने को, उसने अपने आप को और झुकाना पड़ा और अमर को मृत्यु स्वीकारनी पड़ी।

उसके अपने शिष्य यहूदा इस्कोरती ने उसे धोखा दिया और उसे तीस चाँदी के सिक्कों में बेच दिया। आज कितने ऐसे लोग हैं जो मसीह को इससे कम दाम में धोखा देते हैं।

उस लालच के विषय में सोचो जो हमारे बीमार समाज ने पैदा किया है। झूठ तो सामान्य बात मानी गई है, धोखा देना तो मज़ाक लगता है, अपने शरीर से वह व्यभिचार करते हैं, ग़लत रीति से पैसा कमाने के लिए वे अपने आत्मा को बेच देते हैं।

यहूदा को मसीह और पैसे के बीच चुनाव करना था - उसने पैसा चुना। यहूदा की भाँति कई लोग आज पैसा चुन रहे हैं और नैतिक मूल्यों को हवा में उड़ा देते हैं और अपने आत्मा को शैतान को सौंप देते हैं। 'वह तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था। वह दुखी पुरुष था और पीड़ा से उसकी जान पहचान थी। वह ऐसे मनुष्य के समान तुच्छ जाना गया, जिस से लोग मुख फेर लेते हैं और हमने उसका मूल्य न जाना। यशायाह(५३:३)'

दुर्भाग्य से आज भी यह वचन कितने सच हैं। कभी भी परमेश्वर मनुष्य के रूप में, मनुष्यों के बीच रहने नहीं आया, जब तक यीशु नहीं आया, कभी धरती पर ऐसा मनुष्य नहीं रहा जो निष्पाप और अशुद्धता के कलंक रहित हो, जब तक यीशु धरती पर न आया, फिर भी लोगों ने उसे त्यागा और तुच्छ जाना। उसकी तुलना के बाहर पवित्रता उनके पापों को धिक्कारती है, इसलिए लोग आज भी यीशु को नहीं चाहते बल्कि दूसरों के पास जाते हैं।

यह उसका पाप नहीं था, जिस शर्मनाक पापों और मृत्यु की सजा को उसने अपने ऊपर लिया। वह हमारे अपराधों के कारण घायल हुआ। हमारे पापों को अपने शरीर पर लेने से न केवल उन्हें शारीरिक दर्द हुआ बल्कि एक चूर-चूर कर देने वाला वज़न उसके आत्मा पर आया।

मैं इसकी सचित्र व्याख्या करता हूँ। एक सेना की छावनी में आदमियों ने कुछ ग़लत काम कर दिया था। मेजर बड़ा सख़्त व्यक्ति था और वह चाहता था कि अपराधी स्वयं आकर अपराध स्वीकार कर ले, नहीं तो छावनी में दूसरों को इस सजा को भुगतना पड़ेगा। सजा थी ५० भारी कोड़ों की मार। अफ़सर को यह देख निराशा हुई कि विली जो नन्हा बैंड बजाने वाला था, आगे आया और कोड़े काने को तैयार हो गया।

यह क्रूर दृश्य था। यह कह कर सजा हल्की नहीं की जा सकती थी कि वह एक कमज़ोर लड़के पर पड़नी थी। जब कोड़े पड़ रहे थे, विली जब तक सह सका, बड़े साहस के साथ कोड़े सह रहा था और जब सह न सका तो बेहोश होकर गिर पड़ा।

बेकसूर विली को कोड़े खाने की सजा सहते देखकर, असली दोषी से रहा न गया और वह आगे बढ़कर आया और कोड़े खाने को तैयार हो गया। लेकिन फिर भी विली को सजा पूरी करनी पड़ी।

विली उन कोड़ों की मार से उबर नहीं पाया। विली के मरण शय्या पर, असली अपराधी राबर्ट रो रहा था, 'विली, तुमने ऐसा क्यों किया, तुमने मेरी कोड़ों की सजा क्यों खाई।'

विली - नन्हा लड़का जो बैंड बजाता था, यीशु से प्यार करता था और उसके मन को लगा कि वह राबर्ट की कोड़ों की सजा सहे, हालाँकि उसे इसकी क़ीमत अपनी जान द्वारा चुकानी पड़ी।

हाँ, हमारे उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु ने हमारे पापों को अपने शरीर पर ले लिया और हमारे स्थान पर मरा ताकि हम पाप के बंधन से छूट सकें और इस जीवन को सुंदरता से और विजयी जीवन बिता सकें, यह जीवन यीशु हमें देता है।

- जोशुआ दानियल।

.....खज़ाना..पृष्ठ १ से

खो दो, तब परमेश्वर से दया की भीख माँगने पर और यीशु से माफ़ी माँगने पर तुम क्या खाओगे? तुम तो बल्कि अनंत जीवन पाओगे! आगे बढ़ो! और अपने लिए चुन लो - चुना गया।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।